This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

बल्ले मेरे देश के वीर नौजवान

;जन नाट्य मंचऋ मार्च १९९१ऋ ८ कलाकारऋ ४५ मिनट।ध्र

पात्र विभाजन

१. कोरस १ / बटुकेश्वर दत्त / जयदेव / सुखदेव / चमचा १
२. कोरस २ / मुनादी वाला / जतींद्रनाथ दास / आग़ा हैदर / दारोग़ा
३. कोरस ३ / फनींद्रनाथ / चमचा २ / सिपाही / राजगुरू
४. कोरस ४ / अमरजीत / दुर्गा / मां
५. कोरस ५ / अंग्रेज़ अफ़सर / भगवतीचरण / सिपाही / किशन सिंह
६. कोरस ६ / भगत सिंह
७. बैरागी
८. नेकरधारी / उग्रवादी / टोपीधारी / जज कोल्डस्ट्रीम

गोलाकार अभिनय स्थल। एक-एक कर के पात्रों का प्रवेश। कोरियोग्राफ़िक मूवमेंट के साथ कविताओं की प्रस्तुति करते हैं और एक शहीद स्मारक बनाते हैं।

कोरस १ : ये कहानी है उन सरफ़रोश शहीदों की जिन्होंने कहा था

"अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है
वक़्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां
हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है"

कोरस २ : ये कहानी है उन विद्रोही शहीदों की जो संघर्ष में जब थक गए तो कहा

"मैं महा विद्रोही थक गया हूं रण से
लेकिन मैं तब थकूंगा मन से
जब दुखियों की चीत्कारें न होंगी
अत्याचारियों की तलवारें न होंगी"

कोरस ३ : ये उन नौजवान शहीदों की कहानी है जिन्होंने सत्य की खोज में जीवन लगा दिया और कहा

"जीवन की कश्ती का लंगर उठा लो
लंगर ठहरे हुए छिछले पानी में पड़ता है
विस्तृत और आश्चर्यजनक सागर पर विश्वास करो
जहां ज्वार हर समय ताज़ा रहता है
और शक्तिशाली धाराएं स्वतंत्र होती हैं
वहां अनायास ऐ नौजवान कोलंबस
सत्य का तुम्हारा नया विश्व हो सकता है"

कोरस ४ : ये कहानी है उन क्रांतिकारी शहीदों की जिनके हृदय में कोमल भावनाएं थीं किन्तु जिनकी भृकुटि कठोर थी। जिन्होंने कहा

"यदि आवश्यकता हो तो ऊपर से बनो भयानक और उग्र
लेकिन भीतर से रहो हमेशा नम्र
फुफकारो किंतु काटो मत, दिल से प्यार करो
किन्तु अन्याय के ख़िलाफ़ लड़ो"

कोरस ५ : ये कहानी है उन शहीदों की जिन्होंने कहा

"उन्हें ये फ़िक्र है हरदम नया तर्ज़े जफ़ा क्या है
हमें ये शौक़ है देखें सितम की इंतहा क्या है
दहर से क्यों ख़फ़ा रहें चर्ख़ का क्यों गिला करें
सारा जहां दुश्मन सही आओ मुक़ाबला करें
आओ मुक़ाबला करें, आओ मुक़ाबला करें"

कोरस ६ : हवा में रहेगी मेरे ख़याल की बिजली
ये मुश्ते ख़ाक है फ़ानी रहे, रहे न रहे

सब : शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पे मिटने वालों का यही बाक़ी निशां होगा

कोरस १ : २३ मार्च, सन् १९९१ भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव की बरसी।
आइए देखें भगत सिंह के बुत पर कैसे मेले हैं।

त्रिशूल लिए नेकरधारी नेता और दो चमचे उठते हैं।

चमचा १ : भारत माता की जय
चमचा २ : धर्मवीर भगत सिंह जी की जय
चमचा १/२ : नेताजी, ज़िंदाबाद।
चमचा १ : आज धर्मवीर भगत सिंह जी की बरसी पर आदरणीय श्री अनजाना जी भगत सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे।
नेकरधारी : बंधुओ, आज भगत सिंह जी की बरसी के अवसर पर

हमें उन शहीदों को भी याद करना है जो भगत सिंह की तरह ही धर्मयु(में बसंती चोला पहन शहीद हो गए। आपको याद होगा ये वही बसंती चोला है जिसे 'शहीद' फ़िल्म में मनोज कुमार ने पहना था और कहा था*;गाता है*

मेरा रंग दे बसंती चोला मांए रंग दे बसंती चोला
इस चोले को पहन शिवाजी खेले अपनी जान पे
इसे पहन झांसी की रानी मिट गई अपनी आन पे

आज इस बसंती चोले को याद करना है। उन बसंती चोले वाले शहीदों को मत भूलो। सिंघल जी, लाइए माला लाइए।

स्मारक पर माला और त्रिशूल रख कर प्रस्थान। स्टेनगन लिए नारे लगाते एक दल का प्रवेश।

नारे : ख़ालिस्तान ज़िंदाबाद,

उग्रवादी : सारे सिंहों ते सिंहनियों! अज्ज सरदार भगतसिंह दी बरसी दे दिहाड़े असां सारयां ने ऐ क़सम खानी है कि ओद्दन तक चैन नाल नहीं बैठांगे जदों तक अपना इक अलग मुल्क न बना लइए ते सरदार भगत सिंह दे सपने पूरे न कर लइए। ऐस लई असीं हर तरीक़ा अपनावांगे अते भगत सिंह होनां दी दिखाई होई राह ते चलके आतंक फैला के ख़ालिस्तान बना के रहांगे।

स्मारक पर स्टेनगन रख कर प्रस्थान। टोपीधारी नेता के साथ एक दल का प्रवेश।

टोपीधारी नेताः भाइयो और बहनो हम देख रहे हैं कि भगत सिंह की बरसी पर हमने देखा कि कांग्रेस की परंपराएं कितनी पुरानी हैं। भगत सिंह जैसे तमाम नौजवान देश के लिए और कांग्रेस के लिए शहीद हो गए। हम देख रहे हैं कि भगत सिंह के आज़ाद भारत के सपने को हमने सन् '४७ में ही देख लिया था। हमने देखा, हम देख रहे हैं और आगे भी हम देखते रहेंगे कि शहीदों की परंपरा देखी जाती रहे।

नारे : हमारा नेता, ज़िंदाबाद।

स्मारक पर सफ़ेद टोपी पहनाते हैं। प्रस्थान। गाना गाते हुए बैरागी का प्रवेश, भीड़ साथ में है।

बैरागी : पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओये...
देख तेरे देश दा की हो रया हाल ओये
अपनयां देश नाल कीत्तियां ने ठगियां
अज तेरे मत्थे उते कालखां ने लगीयां
शहीदां दी विरासतां दा कर लै ख़याल
पगड़ी संभाल जट्टा...
पंजाब देश दे सिर उते रखी पग वे
आरे न चला के कर तूं अलग वे
हत्था नू तूं रोक लै आक्खे मेरे लग वे
देश दी ज़िंदगी ते मौत दा सवाल वे ओए
पगड़ी संभाल जट्टा...

कोरस १ : वाह बैरागी, वाह! क्या बात है। आज देश को ऐसे ही गानों की ज़रूरत है।

कोरस २ : ये हर साल यहां आते हैं, भगत सिंह के बुत पर अपनी हाज़िरी देने और ऐसे गाने गाते फिरते हैं।

कोरस ३ : सच? आप कब से ऐसे गाने गा रहे हैं?

बैरागी : पुत्तर हम ठहरे मिरासी, हमारा काम गाना, सबको अपना राग सुनाना है। पुरखों से चली आ रही है ये रवायत।

कोरस ३ : मिरासी तो हमने बहुत देखे पर आपका जवाब नहीं *;गाता है* पगड़ी संभाल जट्टा, पगड़ी संभाल ओये। लो बैरागी जी भगत सिंह का बुत आ गया।

बैरागी : ओये इस बुत का हाल तो मेरे देश जैसा हो गया। एक तरफ़ त्रिशूल, दूसरी तरफ़ स्टेनगनें, सिर पे खद्दर की टोपियां। शहीदों की विरासत को भी बांटा जाने लगा। तुम जानना चाहते थे न पुत्तर कि हम कब से गा रहे हैं पगड़ी संभाल जट्टा। वो दिन बरसों बाद भी मैं नहीं भूला हूं। वैसा दिन फिर नहीं आया। उस दिन सुबह की लाली लहू की तरह लाल थी। एक अजब जोश दिल के महासागर में हिलोरें ले रहा था। सतलुज के किनारे मैंने लाशें देखी थींऋ टुकड़े-टुकड़े करके जिन्हें जलाने की कोशिश की अंग्रेज़ हाकिम के सिपाही ने और अधजली लाशों को पानी में बहा दिया था। वो ख़ून सिर्फ़ भगत सिंह का नहीं, सुखदेव का भी था, राजगुरू का भी, कौन सा टुकड़ा किस जिस्म का था कहा नहीं जाता था। दिल में एक सागर चिंघाड़ रहा था और ऊपर से अंग्रेज़ हाकिमों की मुनादी...

मुनादी वालाः सुनो, सुनो, सुनो। सब लोग ध्यान से सुनो। अंग्रेज़ सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह करने वाले और अनेक मासूमों के हत्यारे सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को २३ मार्च, १९३१ को फांसी की सज़ा दे दी गई। मरने से पहले भगत सिंह ने सिक्खी क़बूल की और उसका संस्कार सिख परंपरा से, राजगुरू का संस्कार सनातनी परंपरा से और सुखदेव का आर्यसमाजी परंपरा से किया गया। संस्कार के वक़्त मौजूद पंडित और ग्रंथी ने बताया कि मरने से पहले भगत सिंह के छः छः इंच लम्बे केश थे।

बैरागी : बंद करो ये बकवास। ग्रंथी जी को मांस के टुकड़े नज़र नहीं आए और केश नजर आए? अंग्रेज़ हाकिमों की

चालें कामयाब नहीं होने वालीं। शहीदों का ख़ून ज़ोर-ज़ोर से पुकारेगा।

[अंग्रेज़ अफ़सर और सिपाही आते हैं।]

अफ़सर : इसे रास्ते से हटाओ! क्या बक रहा है ये? बहुत कतरनाक आदमी है। ये क्रांतिकारी लगता है।

[सिपाही बैरागी को पकड़ लेते हैं।]

बैरागी : मुझे छोड़ो! मैं सच को सामने लाकर रहूंगा। अंग्रेज़ देश को धर्म के नाम पर बांटना चाहता है, मैं ये नहीं होने दूंगा।

अफ़सर : मारो हरामज़ादे को!

[सिपाही उसे मारते हैं। प्रस्थान।]

कोरस ४ : तुझे कितनी बार समझाया ओ मिरासी, मानता नहीं तू।

कोरस ६ : ओए तुझे क्या ज़रूरत है बोलने की?

बैरागी : अंग्रेज़ों की चाल को पहचानो। राजगुरू, सुखदेव, भगत सिंह हिंदुस्तानी थे, कोई सिख, आर्यसमाजी, सनातनी नहीं। उन्होंने देश पर जान वुळर्बान कर दी। उनकी विरासत हमारी सबकी सांझी है, उसे बांटा नहीं जा सकता। मैं ये नहीं होने दूंगा।

कोरस १ : पर तू ठहरा मिरासी तू क्या कर सकता है?

बैरागी : मैं गली-गली, शहर-शहर गाऊंगा शहीदों के क़िस्से सुनाऊंगा। लोगों को हक़ीक़त दिखाऊंगा। सतलुज में बहाये गए टुकड़ों का ख़ून एक था। देश का ख़ून, उसे अलग नहीं किया जा सकता। मैं उन नौजवानों की कहानी घर-घर ले जाऊंगा। *;गाता हैद्ध*

बल्ले मेरे देश के वीर नौजवां
करता कहानी मैं इनकी बयां, बल्ले बल्ले तेरे...
बिस्मिल अश्फ़ाक मिल के लड़े
राजगुरू सुखदेव सूली पे चढ़े
देश पे निसार कर गये जां, बल्ले बल्ले तेरे...
बल्ले मेरे देश के वीर नौजवां
शहीदों की जहां घिरी टोलियां
ज़ालिमों की जहां चली गोलियां
आओ मैं दिखाऊं वो बाग़ जलियां

कोरस १ : १३ अप्रैल, १९१९ अमृतसर के जलियांवाला बाग़ में एक आम सभा हुई।

कोरस २ : सभा के दौरान अंग्रेज़ पुलिस अफ़सर डायर के हुक़्म पर सैकड़ों बच्चों, बूढ़ों और नौजवानों को गोलियों से भून दिया गया।

कोरस ३ : जलियांवाला बाग़ की मिट्टी शहीदों के ख़ून से लाल हो गई।

बैरागी : १२ साल का भगत सिंह दूसरे दिन वहां से रक्त सनी मिट्टी लेकर घर लौटा तो उसके मन में कई सवाल उमड़ रहे थे। उसकी बहन अमरजीत ने उसे देखा।

[अमरजीत और भगत सिंह का प्रवेश।]

अमरजीत : क्या बात है भगत सिंह यहां अकेला खड़ा क्या सोच रहा है? *;भगत सिंह चुप रहता हैद्ध* जब से जलियांवाला बाग़ से वापस आया है कुछ बोलता नहीं। और ये क्या एकटक मैदान की तरफ़ देखे जा रहा है?

भगत सिंहः मैं सोच रहा हूं वो दिन कब आएगा जब मैं बदूंक़ों की फ़सल काटूंगा और इस खुले मैदान की तरह आज़ाद हो जाऊंगा।

अमरजीत : बंदूक़ों की फ़सल काटेगा! क्या कह रहा है?

भगत सिंहः याद है बहन, जब मैं छोटा था तो एक दिन खेत में मैंने तिनके बो दिये थे। मेहता जी ने जब पूछा था "क्या कर रहे हो?" तो मैंने कहा था "मैं बंदूक़ें बो रहा हूं"। अब उन बंदूक़ों की फ़सल तैयार हो गई है। जल्दी ही मैं उसे काट लूंगा। *;प्रस्थानद्ध*

अमरजीत : मैं समझ नहीं पाई कि वो क्या कह गया। बारह साल के बच्चे के मन में क्या उधेड़बुन चल रही थी। वो कौन सी चीज़ थी, कौन सा आदर्श था जिसके लिये वो मतवाला हो रहा था। *;प्रस्थानद्ध*

बैरागी : जल्दी ही बंदूक़ों की फ़सल काटने का वक़्त आ गया और वो आदर्श भी ज़ाहिर हो गया। १९२७ में काकोरी कांड के चार शहीदों[

कोरस १ : रामप्रसाद बिस्मिल

कोरस २ : अश्फ़ाकउल्लाह

कोरस ३ : रोशन सिंह

कोरस ४ : राजेन्द्र नाथ लाहड़ी को फांसी की सज़ा हो गई।

कोरस ५ : भगत सिंह ने उन्हें श्र(ांजलि देते हुए लिखा[

कोरस १ : वो दिन कब आएगा जब यह शहीदियां रंग लाएंगी? जब हमारा बाग़ीचा हरा भरा होगा? यहां से पतझड़ का कूच कब होगा? उल्लू कब तक इस बाग़ में डेरा जमाएंगे? बुलबुलें कब चहचहाएंगीं, ये पिंजरे कब टूटेंगे?

कोरस २ : बातें करनी आसान हैं, बड़कें मारनी आसान। चगल-चगल करना और बात है, क़ुर्बानी देना और बात।

कोरस ३ : वो तो ग़रीबों की आह सुनकर मैदान में उतरे थे। वो तो हिंदुस्तान से भूख नंग को दूर करने आए थे। वो तो मज़दूरों और किसानों का हाल पूछने आए थे। वो तो किसी ऊंचे आदर्श के पुजारी थे। उनका आदर्श था देश।

भगत सिंहः दोस्तो वक़्त आ गया है जब हम साहस के साथ ऐलान करें कि समाजवाद हमारा आख़िरी मक़सद है। पिछले

कुछ सालों में हमने अपने कई साथियों को खो दिया है। पर आज़ादी का पौधा शहीदों के ख़ून से ही सींचा जाता है।

भगवतीचरणः पर हमारे इरादों के बारे में लोग अभी भी अंधेरे में हैं। हमें अपना संदेश लोगों तक हर हालत में पहुंचाना है।

दुर्गा : हां, अब हमें वो ही काम हाथ में लेने चाहिए जिनका जनता से सीधा संबंध हो।

भगत सिंहः दुर्गा भाभी आपने बिल्कुल ठीक बात कही है। अब हमें ऐसे रास्ते अपनाने हैं जिनसे सफलता मिलनी यक़ीनी हो।

फनीन्द्र : भगत सिंह सफलता और असफलता तो ऊपर वाले के हाथ में है। हम तो उसके हाथों की कठपुतलियां हैं। हमें तो बस काम करते जाना चाहिए।

भगत सिंहः फनी दा आपका रास्ता तो भगवान के हाथों में सब कुछ छोड़कर बैठ जाने का रास्ता है। वो मेरा रास्ता नहीं हो सकता।

फनीन्द्र : भगत सिंह हम चाहे जो भी कर लें आज़ादी तभी मिलेगी जब ऊपर वाला चाहेगा। हम तो उस संसार की सोचते हैं ये जगत तो मिथ्या है।

भगत सिंहः मिथ्या है तो फिर हम लड़ किस चीज़ के लिए रहे हैं। नहीं, मैं इस जगत को मिथ्या नहीं मानता। मेरा देश न परछाई है न मायाजाल वो एक हसीन हक़ीक़त है और मैं उसे प्यार करता हूं।

फनीन्द्र : तो क्या तुम धर्म और अधर्म में अंतर नहीं करते हो।

भगत सिंहः जो धर्म इंसान को इंसान से जुदा करे, मुहब्बत की जगह नफ़रत सिखाए, वो धर्म मेरा नहीं। मैं समझता हूं हर क़दम जो इंसान को सुखी बनाए वो धर्म है। सच कहूं तो ये धरती स्वर्ग है और यहां का हर इंसान देवता।

फनीन्द्र : इस धरती को स्वर्ग बनाने न जाने कितने मसीहा आए और चले गए। अब तुम आए हो, सो दो-चार दिन में तुम्हारे हौसलों का भी पता चल जाएगा।

भगत सिंहः फनी दा हो सकता है मेरी ज़िंदगी दो-चार दिन की हो तो भी मेरे हौसले बुलंद हैं। मुझे अपने देश के भविष्य पर यक़ीन है। रही बात मसीहाओं की, तो आज के इंसान ने अपने स्वर्ग के लिए बुनियाद इस धरती की ठोस ज़मीन पर खोदनी शुरू कर दी है। इसलिए आज का हर इंसान मसीहा है और मुझे उस पर विश्वास है।

[इस बीच सुखदेव भीतर आ चुका है, भुट्टों के साथ।]

सुखदेव : अरे-अरे बस बहुत हो गया पहले इन भुट्टों से निपट लो। फनी दा से बाद में निपट लेंगे। क्यों दादा?...

फनीन्द्र : हां-हां पहले भुट्टे खाते हैं। *;सब खाते हैंद्ध*

भगत सिंहः क्यों दादा, गर्मागर्म हक़ीक़त के सामने कल्पना का स्वर्ग फीका पड़ गया न?

[सब हँसते हैं। प्रस्थान। अगला दृश्य]

कोरस १ : १९२९ में असेंबली में पब्लिक सेफ़्टी बिल तथा औद्योगिक विवाद बिल पेश किए गए।

कोरस २ : इन दोनों हड़ताल विरोधी, मज़दूर विरोधी काले क़ानून असेंबली में गिर जाने के बावजूद, फ़िरंगी सरकार ऑर्डिनेंस द्वारा लागू करना चाहती थी।

कोरस ३ : जैसे ही अध्यक्ष इन ऑर्डिनेंस की घोषणा करने के लिए अपने स्थान से उठे....

कोरस ४ : भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेंबली हॉल में दो बम फेंके।

कोरस ५ : ज़ोरदार धमाका हुआ।

[इंक़लाब ज़िंदाबाद का नारा लगता है।]

कोरस ६ : दोनों ने हॉल में पर्चे फेंके जिन पर लिखा था... *;पर्चा पढ़ता हैद्ध* "बहरों को सुनाने के लिए बहुत ऊंची आवाज़ की ज़रूरत होती है।" पिछले दस सालों में, अंग्रेज़ सरकार ने, शासन सुधार के नाम पर इस देश का जो अपमान किया है उसकी कहानी दोहराने की ज़रूरत नहीं, और न ही पाखलयामेंट कही जाने वाली इस सभा ने हिंदुस्तान के सिर पर पत्थर फेंककर उसकी जो तौहीन की है, उसके उदाहरणों को याद दिलाने की ज़रूरत है। आज फिर जब लोग साइमन कमीशन से कुछ सुधारों के टुकड़ों की आशा में आंखें फैलाए हैं और उन टुकड़ों के लोभ में आपस में झगड़ रहे हैं, फ़िरंगी सरकार काले क़ानून लाकर दमन को और भी कड़ा कर रही है। मज़दूर नेताओं की अंधाधुंध गिरफ़्तारी से सरकार का रवैया साफ़ हो जाता है। हम विदेशी सरकार को यह बतला देना चाहते हैं कि हम देश की जनता की ओर से "सार्वजनिक सुरक्षा" और "औद्योगिक विवाद" के दमनकारी क़ानूनों और लाला लाजपत राय की हत्या के विरोध में यह क़दम उठा रहे हैं।

इंक़लाब ज़िंदाबाद *[सिपाही आते हैं।]*

सिपाही : गिरफ़्तार कर लो इन्हें।

बैरागी : सुन गोरेयां, मुक़द्दमां करया भगत सिंह सूरमें ते
दत नू वी नाल ही धरया भगत सिंह सूरमें दे
लान इंक़लाब दे नारे, अते बेली फड़ लये सारे
क़िस्से लोकां दी जुबान दे चढ़ गए भगत सिंह सूरमें दे
सुन गोरेयां मुक़द्दमा...
गांदे आज़ादी दे तराने, अते हत्था विच पा लये गाने
नशा इंक़लाब दा चढ़या भगत सिंह सूरमें ते

सुन गोरेयां...

[मुक़द्दमा शुरू होता है।]

जज : आपके ख़िलाफ़ बहुत सीरियस चार्ज्स लगाए गए हैं। क्या आप मानते हैं कि आपने असेंबली में बम फेंक कर लोगों को जान से मारने की कोशिश की?

दत्त : हम बम फेंकने की ज़िम्मेदारी क़बूल करते हैं। हमारा एकमात्र उद्देश्य बहरों को अपनी आवाज़ सुनाना था। हम मानव जीवन को पवित्र मानते हैं। हम साम्राज्यवादी सेनाओं के उन भड़ैत सैनिकों की तरह नहीं हैं, जो हत्या करने में रस लेते हैं।

जज : जब तुम अदालत में आए तुमने इंक़लाब का नारा बुलंद किया। इससे तुम्हारा क्या मतलब है?

भगत सिंहः इंक़लाब एक ऐसा करिश्मा है जिसे प्रकृति स्नेह करती है जिसके बिना कोई प्रगति नहीं हो सकती। इंक़लाब बिना सोची समझी हत्याओं और आगज़नी का दरिंदा मुहिम नहीं और न ही ये चंद बम फेंकना और गोलियां चलाना है। इंक़लाब मानव जाति का जन्मजात अधिकार है।

दत्त : हमारे आदर्श पर कीचड़ उछाला गया है। यह काफ़ी होगा अगर लोग जानें कि हमारे विचार बेहद मज़बूत और तेज़ तर्रार हैंऋ जो न सिर्फ़ हमें आगे बढ़ाते हैं बल्कि फांसी के तख़्ते पर भी मुस्कुराते रहने की हिम्मत देते हैं। इंक़लाब की तलवार विचारों की सान पर तेज़ होती है।

भगत सिंहः इंक़लाब, मायूसी से पैदा हुआ दर्शन नहीं, और न ही सरफ़रोशों का कोई सि(ांत। इंक़लाब ईश्वर के विरोध में हो सकता है, इंसान के विरोध में नहीं। यह इंक़लाब एक पुख़्ता और ज़िंदा ताक़त है। नये और पुराने के, जीवन और ज़िंदा मौत के, रोशनी और अंधेरे के, भीतरी द्वंद्व का प्रदर्शन है, कोई संयोग नहीं है। गोलियों के राग जिसके बारे में कवि गाते आए हैं सच्चाई रहित हो जाएंगे अगर इंक़लाब को समूची सृष्टि से ख़त्म कर दिया जाए। इंक़लाब एक नियम है, इंक़लाब एक आदेश है, इंक़लाब एक सत्य है।

दत्त : एक ओर सबके लिये अनाज पैदा करने वाला किसान भूखों मरता है, बुनकर अपने बच्चों के तन ढकने तक को कपड़े नहीं जुटा पाता। और दूसरी ओर पूंजीपति शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग, अपनी सनक पूरी करने के लिए करोड़ों रुपया पानी की तरह बहा देते है।

भगत सिंहः हमें ऐसी आज़ादी नहीं चाहिए जिससे फ़िरंगियों के जाने के बाद सत्ता तेज बहादुर सप्रू जैसे लोगों के हाथ में आ जाए। फ़र्ज़ के बिगुल की आवाज़ सुनो, बढ़ो अंग्रेज़ साम्राज्य के ख़िलाफ़ नौजवानों के दिलों में उकताहट और नफ़रत भर दो। ऐसे बीज बो डालो कि जो उगें और बड़े वृक्ष बन जाएं क्योंकि इन बीजों को तुम अपने ख़ून से सींचोगे। तब एक भयानक भूचाल आयेगा, जो बड़े धमाके से ग़लत चीज़ों को नष्ट कर देगा। साम्राज्यवाद का महल धूल में मिल जाएगा। यह तबाही महान होगी।

दोनों : तब और सिर्फ़ तब भारतीय क़ौम जागेगी जो अपने गुणों और शान से इंसानियत को हैरान कर देगी। तभी व्यक्तिगत मुक्ति सुरक्षित होगी और मेहनतकशों की सरदारी को सत्कारा जायेगा। हम ऐसे ही इंक़लाब के आने का संदेश दे रहे हैं।

इंक़लाब ज़िंदाबाद

क्रांति अमर रहे .....

जज : मुल्ज़िम बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह को उम्र क़ैद की सज़ा दी जाती है।

कोरस १ : भगत सिंह और दत्त को अलग-अलग जेलों में डाल दिया गया।

कोरस २ : यहां उन्होंने देखा कि राजनीतिक क़ैदियों की स्थिति बहुत ख़राब है।

कोरस ३ : उनकी हालत को सुधारने के लिए दत्त और भगत सिंह ने भूख हड़ताल शुरू कर दी।

कोरस ४ : उनके साथ शामिल हो गए

कोरस ५ : सुखदेव

कोरस ६ : राजगुरू

कोरस १ : शिव वर्मा

कोरस २ : जयदेव

कोरस ३ : और जतीन्द्रनाथ दास

बैरागी : जतीन दास न जाने किस मिट्टी का बना था। उसे किसी भी तरह खाना देने की कोशिशें बेकार रहीं। जतीन को ललचाने के लिए मछली और चावल दिए गए पर भला शेर भी घास खा सकता है?

[क्रांतिकारी भूख हड़ताल पर बैठे है।]

जतीन : तुम ज़बरदस्ती खाना कैसे खा लेते हो ?

भगत सिंहः मैं जितना हो सकता है विरोध करता हूं पर वो मुझे ज़बरदस्ती खिला ही देते हैं। मेरी नाक बड़ी है वो आसानी से नली डाल लेते है।

जयदेव : मैं तो उसके बावजूद उल्टी कर देता हूं।

भगत सिंहः पर दास तुम्हारी हालत अब बहुत ही ख़राब हो गई है। तुम थोड़ा दूध पी लेना।

जतीन : नहीं मैं मरना चाहता हूं। अपने देश के लिए और क़ैदियों की हालत सुधारने के लिए।

जयदेव : यहां पानी के घड़ों को ख़ाली करके उनमें दूध भर दिया गया है। लो, फिर आ गए ज़ोर आज़माइश करने के लिए। आज लगता है तुम्हें ही खिलाएंगे।

[अफ़सर और सिपाहियों का प्रवेश।]

अफ़सर : आज जतीनदास की नाक में नली डाल कर कुछ खिलाना ज़रूर है। पकड़ लो इसे।

जतीन : नहीं *[सिपाही पकड़ते है। नली डाली जाती है। खाना खिलाने की कोशिश। जतीन दास उंगली डालकर उल्टी करता है।]*

जतीन : पानी दो पानी। तुम मुझे कभी भी ज़बरदस्ती नहीं खिला पाओगे। पानी...

अफ़सर : हां हां जाओ घड़ों में से पानी ले लो। जाओ...

जतीन : पर उनमें पानी नहीं है। उनमें तो दूध है। मुझे पानी चाहिए। ले जाओ इन्हें। *[उठाकर घड़े फेंकता है और ख़ुद भी गिर पड़ता है।]*

कोरस १ : १३ सितम्बर, १९२९ को जतीनदास को मौत ने अपनी आगोश में ले लिया।

कोरस २ : चारों दिशाएं नारों से गूंज उठीं।

कोरस ३ : जतीन दास ज़िंदाबाद

कोरस ४ : नौकरशाही मुर्दाबाद

कोरस ५ : साम्राज्यवाद मुर्दाबाद

कोरस ६ : इंक़लाब ज़िंदाबाद

बैरागी : इसके बाद शुरू हुआ लाहौर षड़यत्र कांड का मुक़द्दमा। नारे लगाते गीत गाते क्रांतिकारी अदालतों में आते।

[तीन जज आते है। क्रांतिकारी गीत गाते आते है।]

गाना : सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमां
हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
अब मेरी क़िस्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है
सरफ़रोशी की तमन्ना.....
इंक़लाब ज़िंदाबाद
साम्राज्यवाद मुर्दाबाद

जज

कोल्डस्ट्रीम : इन लोगों को हथकड़ी लगा दी जाए। और ये इंक़लाब ज़िंदाबाद के नारे बंद करो।

भगत सिंहः जज साहब इंक़लाब ज़िंदाबाद के नारे तो हम बंद नहीं करेंगे। इंक़लाब ज़िंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद।

सुखदेव/

राजगुरू : *;नारे लगाते हैंद्ध* हम इस अदालत का बहिष्कार करते हैं।

कोल्डस्ट्रीम : यू डर्टी इंडियन डॉग! आई विल टीच यू अ लेसन। कांस्टेबल! भगत सिंह को पंद्रह कोड़ों की सज़ा अभी दी जाए।

भगत सिंह : तुम्हारे कोड़ों से हमारी आवाज़ दब नहीं पाएगी। हमारे मुंह से इंक़लाब की बोली निकलती रहेगी।

[कांस्टेबल कोड़े लगाता है। हर कोड़े के साथ इंक़लाब ज़िंदाबाद का नारा बुलंद होता है।]

भगत सिंह : जस्टिस आग़ा हैदर मैं आपसे पूछना चाहता हूं क्या आप भारतीय हैं? क्या आप भी एक डर्टी इंडियन डॉग हैं हमारी तरह? अंग्रेज़ दरिंदों के जुल्म को मैं समझ सकता हूं। आप जो इस अदालत में एक जज की हैसियत से बैठे हैंऋ मैं आपसे पूछता हूं क्या आपका ख़ून इतना ठंडा हो गया है कि आप कुत्ता कहलाने के बावजूद मालिक के तलवे चाटते हैं? वो दिन कब आएगा जब हम ऐसे ढकोसलों में हिस्सा लेने से इंकार कर देंगे। आप जैसी मानसिक अवस्था वाले जजों से इंसाफ़ की उम्मीद करना मूर्खता ही होगी।
इंक़लाब ज़िंदाबाद

सुखदेव/

राजगुरू : इंक़लाब ज़िंदाबाद

आग़ा हैदर : मैं आज से, इस अदालत के पद से इस्तीफ़ा दे रहा हूं। अंग्रेज़ अदालतें जो शोषण के पुर्जे हैं, इंसाफ़ नहीं दे सकतीं, ख़ासकर राजनैतिक क्षेत्रों में जहां सरकार और लोगों के हित में टकराव है। ये अदालत, सिवाय इंसाफ़ के ढकोसले के, और कुछ नहीं दे सकती। इसलिए मैं आग़ा हैदर इससे इस्तीफ़ा दे रहा हूं।

[सब जाते हैं।]

कोरस १ : लेकिन इस घटना का अंग्रेज़ शासन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। १७ अक्तूबर, १९३० को भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सज़ा सुना दी गई।

कोरस २ : फांसी से कुछ दिन पहले जेल के दारोग़ा के साथ भगत सिंह के परिवार वाले उससे मिले।

दारोग़ा : सरदार तुम मरने जा रहे हो तुम्हें अफ़सोस तो नहीं है?

भगत सिंहः इस रास्ते पर क़दम रखते समय मैने सोचा था कि अगर मर कर भी लोगों के दिल में इंक़लाब की लौ जगा सका तो अपने आप को सफल समझूंगा। इंक़लाब के नारों की आवाज़ मेरे कानों में गूंज रही है।

दारोग़ा : भगत सिंह, अब तेरा आख़िरी वक़्त आ गया है। मेरी एक बात मान ले, वाहेगुरू का नाम ले और अरदास कर।

भगत सिंहः *;हँसता हैद्ध* तुम्हारे प्यार का शुक्रगुज़ार हूं। सारी उम्र उसे याद नहीं किया अब उसे याद करूं तो वो कहेगा कि मैं

बुज़दिल हूं। इसलिए अच्छा यही होगा कि जैसे सारी उम्र जिया वैसे ही मरूं।

किशन सिंह : बेटा हमने पूरी कोशिशें कर ली। अब शायद तुझसे फिर कभी भेंट न हो।

भगत सिंह : आपने कुछ सुना है क्या?

किशन सिंह : हां

भगत सिंह : क्या?

किशन सिंह : तुम्हारी, राजगुरू और सुखदेव की सज़ा बदली नहीं। गांधी ने सिर्फ़ कांग्रेसियों की रिहाई का सवाल उठाया है। और.....

भगत सिंह : और क्या? ये तो हमें मालूम ही था।

किशन सिंह : महात्मा गांधी ने कहा है कि इन तीनों को कांग्रेस के कराची अधिवेशन से पहले ही फांसी पर चढ़ा दिया जाए।

भगत सिंह : ये तो बड़ी खुशी की बात है। काल कोठरी की गर्मी से तो बच जाएंगे। पिताजी, लाश लेने मां को मत भेजना, कुलबीर को भेज देना। मां रो पड़ेगी तो लोग कहेंगे भगत सिंह की मां रो रही है।

मां : पुत्तर अगर मैं शेर पैदा कर सकनी आं ते शेरनी दा कलेजा वी रखदी आं। अपनी बात पर अड़े रहना पुत्तर। एक न एक दिन सभी को मरना है। मैं चाहती हूं तुम फांसी के तख़्ते पर खड़े होकर इंक़लाब ज़िंदाबाद के नारे लगाना। मैं जश्न मनावांगी पुत्तर तू फांसी ते नहीं चढ़या घोड़ी ते चढ़या है पुत्तर।

बैरागी : आओ जी बहनो, रल मिल, गाविये घोड़ियां
जंज तां होई तैयार ओये
मौत कुड़ी परनावन चलया
भगत सिंह सरदार ओये
राजगुरू, सुखदेव सरवाले
पाया फांसी वाला हार ओये
धन ने मांवां पुत जिनांदे सूरमें
देश ते जिंद दित्ती वार ओये

[भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू को फांसी होती है। तीनों नारे लगाते हैं।]

तीनों : इंक़लाब ज़िंदाबाद *;गिरते हैंध्द*

अंग्रेज़ : जल्दी से इन लाशों के टुकड़े टुकड़े करो। शहर में बहुत तनाव है वहां सतलुज के किनारे इनको जला दो। कसूर के ग्रंथी और पंडित जी भी आ गए हैं। ध्यान रहे किसी को कानों कान ख़बर न होने पाए। जल्दी करो!

सिपाही १: सर वो देखिये रोशनियां। लगता है मशालें हैं। शायद गांव वाले आ रहे हैं। *;कुछ सुनता हैध्द* सर, गाने की आवाज़।

सिपाही २ : सर लगता है वो लोग नज़दीक आ गए। सर देखिए *[बैरागी कुछ लोगों के साथ गाते हुए आता है।]*

बैरागी : दो आवाज़ मिलकर के कि ज़ालिम को बता दें हम अब
उसके जुल्म का जल्द ही ख़ात्मा होगा
शहीदों की शहीदियां अब रंग लाएंगी
अब अपने हाथ होंगे और उसका गरेबां होगा
कभी वो दिन भी आयेगा कि जब आज़ाद हम होंगे
ये अपनी ही ज़मीं होगी ये अपना आस्मां होगा
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पे मिटने वालों का यही बाक़ी निशां होगा।

o